चैत्र 1889
अप्रैल 1967

बिक्री के लिए नहीं

निदेशक, प्रकाशन विभाग, पुराना सचिवालय, दिल्ली-6 द्वारा प्रकाशित
तथा प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, फरीदाबाद, द्वारा मुद्रित

मैं बचपन से ही गोभक्त रहा हूं। मैं उसे सारी सुख-समृद्धि की जननी मानता हूं।

दुनिया के किसी भी देश में गाय या गोवंश की ऐसी दुर्दशा नहीं जैसी भारत में है। आश्चर्य तो यह है कि भारत ही एकमात्र ऐसा देश है जहां गौ पूजी जाती है।

ऐसी स्थिति लाई जा सकती है और लाई जानी चाहिए कि गोवध में तनिक भी आर्थिक लाभ न रह जाए। पर दुर्भाग्य से दुनिया भर में भारत ही एक ऐसा देश है, जहां इस पूज्य पशु को मारना सब से सस्ता पड़ता है।

हम दया भाव से पिंजरापोल और गौशालाएं स्थापित करते हैं, पर जिस ढंग से वे चलते हैं, उससे दया प्रगट नहीं होती।

यह कहना गलत है कि गाय के दूध की मांग नहीं है......क्या आप नहीं जानते कि चाय का कैसे प्रचार किया जाता है। चाय के पैकेट मुफ्त बांटे जाते हैं। चाय मुफ्त पिलाने के लिए दुकानें चलाई जाती हैं। गाय के दूध का भी आप ऐसे ही प्रचार कर सकते हैं।

गोधन और गोरस की उन्नति में डेनमार्क नहीं भारत ही आदर्श बनना चाहिए।

गौ मेरे लिये दया की मूर्ति है। अभी तक हम गोरक्षा से केवल खिलवाड़ करते रहे हैं। पर हमें जल्दी ही वास्तविकता का सामना करना पड़ेगा।

कानून बनाना तो गोरक्षा कार्यक्रम का सबसे छोटा अंग है.....लोग यह समझते हैं कि बस कानून बनते ही हर बुराई किसी प्रकार के प्रयत्न के बिना अपने आप मिट जाती है।

मैं धर्म के मामले में सरकार के हस्तक्षेप के विरुद्ध हूं और भारत में गौ का प्रश्न धार्मिक और आर्थिक दोनों तरह का है।

हिन्दू धर्म ने केवल हिन्दुओं के लिए गोहत्या का निषेध किया है सारी दुनिया के लिए नहीं।

गोहत्या के लिए कसाई को दोषी ठहराना ठीक वैसा ही है जैसा कि अपने बुखार के लिए डाक्टर के सिर दोष मढ़ना। हमारी ही घोर उपेक्षा के कारण गौ कसाई के हाथ में पड़ती है।

हम गौ की रक्षा नहीं कर सकते इसी का आगे यह परिणाम होता है।क देश में भूखे, सूखे और हड्डियों के ढांचे वाले लोग दिखाई देते हैं।

हमारी सभ्यता दूसरी सभ्यताओं से बिल्कुल भिन्न है। हमारे पशु हमारे जीवन के अंग हैं।

समाज और गाय

मेरे लिए गौ सीधेपन की मूर्ति है। गोरक्षा का अर्थ है दुर्बल और असहाय की रक्षा...। गोरक्षा का अर्थ है मूक पशुओं से प्रेम। इस पवित्र भावना को श्रम और तपस्या द्वारा बराबर बलवान बनाना चाहिए।

यंग इंडिया 8-6-1921

× × ×

गोरक्षा को मैं मनुष्य के विकास के इतिहास की सबसे बड़ी घटनाओं में गिनता हूं। गोरक्षा की भावना से मनुष्य जीवदया का पाठ पढ़ता है। मैं गौ का अर्थ मनुष्य से नीचे सब प्राणियों से लेता हूं। गौ के द्वारा मनुष्य यह सीखता है कि सब प्राणियों में वही जीवन है जो उसमें है। प्राणिमात्र से मनुष्य का नाता जोड़ने के लिये गौ को ही क्यों चुना गया, यह बात मेरे लिए बिल्कुल साफ है। भारत में गौ मनुष्य की सबसे अच्छी साथी रही है, वह मनुष्य को सब कुछ देती है, वह केवल दूध ही नहीं देती, बल्कि खेती भी उसी के कारण होती थी।

सच तो यह है कि गाय करुण रस की कविता है। यह सीधा-साधा पशु दया की साक्षात् प्रतिमा है, यह करोड़ों भारतीयों के लिए माता है। गौ की रक्षा का अर्थ है, परमात्मा के बनाए हुए सब मूक प्राणियों की रक्षा करना।

यंग इंडिया 6-10-1921

× × ×

जब मैं गोरक्षा का व्रत लेता हूं तो मेरा मतलब केवल भारत की गौ की रक्षा नहीं, बल्कि संसार भर की गौओं की रक्षा है। मेरा धर्म मुझे सिखाता है कि मैं अपने आचरण से उन लोगों के मन में भी,

जिनका मत मेरे मत से भिन्न है, यह विश्वास पैदा करूं कि गाय को मारना पाप है और इसलिए गोहत्या छोड़ देनी चाहिए। मेरी यह आकांक्षा है कि सारी दुनिया में गौ की रक्षा की जाए और सब इस सिद्धांत को मानें। लेकिन इसके लिए पहले मेरा अपने घर को ठीक करना जरूरी है।

यंग इंडिया 29-1-1921

× × ×

अभी तक हमने गौ को कसाई के हाथ से बचाने पर ही अपनी शक्ति का अपव्यय किया है लेकिन हम कसाई से बचाने की कोशिश क्यों करें। आखिर कसाई को भी अपना धंधा करना है, गोहत्या के लिए कसाई को दोषी ठहराना ठीक वैसा ही है जैसा अपने बुखार के लिए डाक्टर के सिर दोष मढ़ना। हमारी घोर उपेक्षा से ही गौ कसाई के हाथों पड़ती है और उसके लिए हमी पूरी तरह जिम्मेदार हैं। हमारा यह कर्तव्य है कि हम आर्थिक दृष्टि से, गौ को कसाई के हाथ बेचना अनावश्यक और असम्भव बना दें।

हरिजन 19-2-1938

× × ×

आज गोवंश के विनाश की स्थिति पैदा हो गई है और मुझे यकीन नहीं कि हम इसको रोकने में सफल हो पायेंगे, लेकिन यदि गौ समाप्त होती है तो हम भी उसी के साथ मिट जाएंगे। हम से मतलब है हमारी सभ्यता, यानी वह सभ्यता जो निस्संदेह अहिंसक और ग्रामीण सभ्यता है। हम चाहें तो हिंसक बनकर समूचे अलाभकारी पशुओं को मार डालें। तब तो यूरोप की तरह दूध और मांस के लिए ही पशु पालना चाहिए, लेकिन हमारी सभ्यता बुनियादी तौर से भिन्न है। हमारा जीवन हमारे पशुओं से जुदा नहीं। हमारे अधिकांश ग्रामीण भाई पशुओं के साथ ही अक्सर एक ही घर में रहते हैं, दोनों एक साथ रहते हैं और भूखे भी एक साथ मरते हैं। अक्सर मालिक अपने गरीब पशुओं को भूखा मारता है, उनसे उनकी शक्ति से अधिक

काम लेता है और उन पर निर्दयता करता है। अगर हम अपने को सुधार सकें तो हमारी और हमारे पशुओं दोनों की रक्षा होगी, वरना हम दोनों ही डूबेंगे।

हरिजन 15-2-1942

× × ×

अगर हम गौ को पूज्य मानें तो हम सभी फालतू, कमजोर और बेकार पशुओं को खत्म कर सकते हैं। इसी तरह हम फालतू, बीमार और कमज़ोर मनुष्यों को भी मार कर इस देश को गरीबी से मुक्त कर सकते हैं। तब थोड़े से आदमी संहारकारी हथियारों के बल पर हिंसक और अहिंसक सभी पशुओं और मनुष्यों को पृथ्वी पर भार समझ कर मनमाने ढंग से खत्म कर सकेंगे और इस विस्तृत धरती को भोग सकेंगे। लेकिन इस तरह इस भारत देश में, जिस तरह, सर्वत्र गरीब और रोगी रहते हैं, उसी तरह हमारे पशु भी जीवित रहने के अधिकारी हैं। इसलिए हमें पशुओं की समस्या को अपनी गरीबी की समस्या की तरह ही, अपने ढंग से, जिसे कुछ लोग दकियानूसी ढंग समझते हैं, हल करना होगा और हल करना चाहिए।

यंग इंडिया 27-8-1925

× × ×

अतः आमतौर से पशुओं को न मारने और उनकी रक्षा को हमें अपना निर्विवाद कर्तव्य समझना चाहिए। हिन्दुत्व के लिए यह बड़े श्रेय की बात है कि उसने गोरक्षा को एक कर्तव्य माना है और यह हिन्दू को शोभा नहीं देता कि हम केवल गौ की रक्षा की ही बात करें और अन्य पशुओं की रक्षा से अपना हाथ खींच लें। गाय तो केवल एक प्रतीक है और गाय की रक्षा तो हमें करनी ही चाहिए।

गाय की रक्षा केवल स्वार्थ के लिए नही होनी चाहिए। यह ठीक है कि कुछ न कुछ स्वार्थ इसमें अवश्य आ जाता है। अगर शुद्ध स्वार्थ की ही बात होती तो अन्य देशों की तरह गाय को ढांढ होने पर मार दिया जाया करता। पर गाय चाहे जितना बोझ बनकर रहे

कोई हिन्दू उसे मारेगा नहीं। देश में जो असंख्य गौशालाएं खुली हुई हैं और जिनमें ढांढ और लंगड़ी-लूली गऊओं की देखभाल की जाती है, वह इसी बात का प्रमाण है। यह ठीक है कि ये गौशालाएं बहुत घटिया दर्जे की हैं और इनसे उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता, लेकिन इनकी भावना से इनकार नहीं किया जा सकता।

यंग इंडिया 11-11-1926

× × ×

भाषण देने से समस्या हल नहीं होती। इसके सम्बन्ध में गहराई से अध्ययन और त्याग करने की जरूरत है। धन-दौलत जमा करके कुछ दान पुण्य करना ही व्यापार कौशल नहीं। व्यापार कौशल यही है कि हम पशुओं को अच्छी तरह पालना सीखें और लाखों को सिखाएं। स्वयं गोरक्षा के आदर्श का पालन करना और इस काम पर धन खर्च करना सच्चा व्यापार है। लेकिन आज स्थिति उल्टी है। धनी लोग किसी न किसी तरीके से धन-दौलत जमा करते हैं और थोड़ा पैसा गौशालाओं को दान करके, समझ लेते हैं कि पुण्य कर लिया। इन गौशालाओं में पशुपालन से अनभिज्ञ व्यक्ति नौकर रखे जाते हैं। यह इतनी कठिन समस्या है कि शायद इसको हल करने के लिए उससे भी अधिक कार्यक्षमता की जरूरत है, जितनी स्वराज्य लेने के लिए चाहिए।

हरिजन 17-2-1946

× × ×

मेरे लिए गोरक्षा, महज गाय की रक्षा नहीं है। गौ सब प्राणियों की प्रतिनिधि है, गौ की रक्षा का मतलब है—दुर्बल, असहाय और मूक की रक्षा। मनुष्य सारी सृष्टि का मालिक नहीं, बल्कि उसका सेवक है, उसके लिए तो गाय दया की जीती-जागती तस्वीर है। अभी तक हम गोरक्षा का नाम भर करते रहे हैं, लेकिन जल्दी ही हमें वास्तविकता का सामना करना होगा।

ए बंच आफ ओल्ड लैटर्स 25-4-1925

× × ×

गौ और धर्म

गोरक्षा का अभिप्राय है परमात्मा के बनाए हुए सारे प्राणियों की रक्षा करना, इन पशुओं की पुकार इस कारण भी सुननी चाहिए कि ये बेजुबान हैं। गोरक्षा सारे संसार को हिन्दू धर्म की एक देन है और हिन्दुत्व तब तक जीवित रहेगा जब तक हिन्दू गौ की रक्षा करता रहेगा। हिन्दुओं का यह कर्तव्य बताया गया है कि वे आत्म-त्याग, तपस्या और आत्म-शुद्धि के द्वारा गौ की रक्षा करें। पशुओं पर निर्दयता दिखाते ही हम भगवान और हिन्दुत्व से विमुख हो जाते हैं।

यंग इंडिया 6-10-1921

× × ×

हिन्दू धर्म केवल कुछ चीजों को खाने या न खाने में नहीं है। इसकी आत्मा तो है शुद्ध आचरण और सत्य-अहिंसा का पालन। तथा बहुत से मांसाहारी लोग ऐसे हैं जो दया और सत्य का व्यवहार करते हैं और भगवान से डरते हैं। ये लोग मांस न खाने वाले परन्तु ढोंगी हिन्दू से अच्छे हैं।

यंग इंडिया 8-4-1926

× × ×

भारतीय संघ में कानून के द्वारा गौहत्या रोकने का प्रस्ताव बहुत बड़ी गलती होगी···इस तरह के मामलों में निषेध कानून बनाना हिन्दुत्व की गलत ढंग की सेवा होगी। हिन्दुत्व की रक्षा तभी हो सकती है जब हर मजहब के लोगों के साथ पूरा न्याय किया जाए।

हरिजन 31-8-1947

× × ×

हिन्दू धर्म में हिन्दुओं के लिए ही गोहत्या का निषेध है, सारी दुनिया के लिए नहीं। धार्मिक निषेध तो अपने अन्दर से ही होना चाहिए। बाहर से कोई चीज़ लादने का अर्थ है जबर्दस्ती। धर्म में जबर्दस्ती को स्थान नहीं। भारत केवल हिन्दुओं का ही नहीं, मुसलमानों, सिखों, पारसियों, ईसाइयों, यहूदियों और उन सब का भी है जो भारतीय होने का और संघ के प्रति निष्ठा का दावा करते हैं।

हरिजन 10-8-1947

× × ×

अगर मैं थोड़ी सी गायों को जबरन उन लोगों के हाथ से मरने से बचा भी लूं जो उनको मारना पाप नहीं समझते, तो इससे क्या लाभ होगा।

यंग इंडिया 29-1-1925

× × ×

गौ का सवाल बहुत बड़ा सवाल है और हिन्दू के लिए सबसे बड़ा सवाल है। गौ में मेरी श्रद्धा किसी से भी कम नहीं। जब तक हिन्दू गौ की रक्षा करने का सामर्थ्य नहीं रखता तब तक वह अपने कर्तव्य का पालन नहीं करता। यह सामर्थ्य या तो शारीरिक बल से आ सकता है या आत्मिक बल से। हिंसा द्वारा गाय की रक्षा करने का प्रयत्न, हिन्दुत्व को शैतानियत में बदल देगा और गोरक्षा के महत्व को बहुत बहुत गिरा देगा।

यंग इंडिया 18-5-1921

× × ×

हिन्दुओं की परीक्षा तिलक, छापा, मंत्रोच्चार, तीर्थ यात्रा और रूढ़ियों के पालन से नहीं होगी बल्कि गौ की रक्षा करने की उनकी सामर्थ्य से होगी।

यंग इंडिया 6-10-1921

× × ×

इसमें सन्देह नहीं कि भारत की गरीबी की ही तरह पशु धन की समस्या भी बराबर गम्भीर होती जा रही है, लेकिन भारत की पशु धन की समस्या अधिकांश जनता, यानी हिन्दुओं के लिए, गोरक्षा की ही समस्या है। इसलिए निस्संदेह, हमें इसके लिए हमेशा भारी त्याग करना होगा ···· धर्म के लिए त्याग करना कर्तव्य है लेकिन उस धर्म भावना का कोई मूल्य नहीं, जो त्याग के योग्य न हो। गोरक्षा के नाम पर हम आंख बंद करके, अवैज्ञानिक ढंग से जो पैसा खर्च करते हैं, उसका सही उपयोग हो सकता है····· इससे सीधे कोई लाभ तो नहीं मिलेगा, पर इससे पैसे की बरबादी अवश्य रुकेगी और हजारों पशुओं को कसाई की छुरी से कटने से बचाया जा सकेगा। आज हमारे अज्ञान और आलस्य के कारण लाखों इन्सान और जानवर भूख से मरते हैं। यह भारत जैसे धर्मप्रायण देश के नाम पर कलंक है।

यंग इंडिया 27-8-1925

× × ×

गोरक्षा के लिए कानून

कानून द्वारा गोरक्षा निषेध, गोरक्षा कार्यक्रम का सबसे छोटा अंग है। मुझे बहुत सी गोरक्षा संस्थाओं के जो पत्र मिले हैं और उनके जो काम हैं, उनसे तो ऐसा लगता है कि वे कानूनी प्रतिबन्ध मात्र से सन्तुष्ट हो जाएंगी। मैं इन सब संस्थाओं से कहना चाहता हूं कि अपनी सारी शक्ति को केवल कानून बनाने पर ही न नष्ट करें। इस देश में पहले ही से कानूनों की भरमार है। लोग शायद यह सोचते हैं कि किसी भी बुराई के खिलाफ कानून बना देने भर से यह अपने आप मिट जाएगी। इससे बड़ी आत्मवंचना हो नहीं सकती। कानून तो केवल एक नासमझ या बहुत छोटे से, दुष्ट वर्ग के लिए होता है लेकिन जिस कानून का विरोध बहुत से बुद्धिमान लोग और संगठित होकर करें या धर्मोन्मत्त अल्पसंख्यक वर्ग करे, वह कानून कुछ काम नहीं दे सकता।

यंग इंडिया 7-7-1927

× × ×

जब तक कि राज्य सरकारें और जनता, पशु-धन की उन्नति दूध के धंधे का विकास और मरे हुए जानवरों को ठिकाने लगाने के काम में पूरी जनता के लाभ की दृष्टि से सहयोग न करें, तब तक भारत में कसाइयों के हाथों पशु काटे ही जाते रहेंगे। गोवध के रोकने के लिए हम चाहे जितने कानून बना दें उनका कोई असर नहीं होगा।

यंग इंडिया 7-7-1927

× × ×

कानून के बल पर गौहत्या कभी नहीं बंद हो सकती। लोगों को शिक्षा देकर, समझाकर और उनमें दया उत्पन्न करके ही

इसे रोका जा सकता है । जो जानवर समाज पर बोझ हैं, उनको और शायद जो ग्रादमी भी बोझ हैं, उनको भी बचाना सम्भव नही होगा ।

यंग इंडिया 15-9-1946

× × ×

मै धर्म में सरकार का किसी तरह भी हस्तक्षेप नही चाहता और गौ का सवाल, भारत में आर्थिक और धार्मिक दोनों तरह का है । जहां तक अर्थ-व्यवस्था का सवाल है, मुझे यह कहने में जरा भी संकोच नहीं कि देश के पशुधन की रक्षा करना हर शासन का काम है चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान । भारत में तो, जिसे मै हिन्दुओं के समान ही मुसलमानों, ईसाइयों और दूसरो का भी देश समझता हूं, हिन्दू राज्य भी, ऐसे गोवध को नही रोक सकता, जिसे प्रजा का कोई वर्ग, धार्मिक कार्य समझे और जिसे अपने घर में बिना हिन्दुओं की धार्मिक भावना को ठेस पहुंचाने के इरादे से करे ।

यंग इंडिया 7-7-1927

× × ×

भारत की अर्थव्यवस्था में गाय

गोरक्षा के प्रश्न पर मैं ज्यों-ज्यों सोचता हूं मेरा यह विश्वास दृढ़ होता चला जाता है कि गौ और गोवंश की रक्षा तभी हो सकती है जब मेरे सुझावों के अनुसार निरन्तर रचनात्मक प्रयत्न किए जाएं। मैंने जो रचनात्मक कार्यक्रम तैयार किया है, उसमें सुधार की गुंजाइश हो सकती है और शायद हो भी, लेकिन इसमें सन्देह की जरा भी गुंजाइश नहीं कि भारत के पशुधन को नाश से बचाने के लिए, विशाल रचनात्मक कार्यक्रम की बेहद जरूरत है। पशुओं की रक्षा, भारत के लाखों भूखों मरने वाले उन नर-नारियों की रक्षा की दिशा में ही एक कदम होगा, जिनकी स्थिति उतनी ही बुरी है जितनी उनके जानवरों की।

यंग इंडिया 7-7-1927

× × ×

दुनिया में पशुओं की कहीं ऐसी दुर्दशा नहीं है जैसी भारत में है........मेरे विचार में जब तक यह स्थिति है, हमें यह अधिकार नहीं कि हम किसी को गौहत्या करने से रोकें। श्रीमद्भगवत में एक स्थान पर बताया गया है कि भारत के पतन के क्या कारण हैं। उनमें से एक कारण यह बताया गया है कि हमने गौ की रक्षा छोड़ दी है। आज मैं आपको यही समझाना चाहता हूं कि भारत की इस दीन दशा का गोरक्षा में हमारी असमर्थता से कितना घना सम्बन्ध है।

यंग इंडिया 29-1-1925

× × ×

मेरे विचार में, गोरक्षा के प्रश्न के आर्थिक पक्ष को ठीक से उठाया जाए तो इसका नाजुक धार्मिक पक्ष भी अपने आप सुलझ जाएगा।

आर्थिक दृष्टि से गौहत्या को बिल्कुल निरर्थक बना देना चाहिए और ऐसा किया जा सकता है। लेकिन दुर्भाग्य से, दुनिया भर में, हिन्दुओं के पूज्य पशु गाय को मारना कहीं इतना सस्ता नहीं जितना हिन्दुओं के इस देश में है। इसके लिए मैं ये सुझाव दूंगा :

(1) सरकार खुले बाजार में बेचे जाने वाले हर पशु को ऊंची बोली लगाकर खुद खरीदे।

(2) सरकार सब बड़े-बड़े शहरों में अपनी ओर से दूधशालाएं चलाए जिससे लोगों को सस्ता दूध मिले।

(3) सरकार अपने पाले हुए मृत पशुओं की खाल और हड्डियों का उपयोग करने के लिए चमड़ा कमाने के कारखाने चलाए और दूसरों के मरे हुए पशु भी खरीदे।

(4) सरकार आदर्श पशु-शालाएं खोले और लोगों को सिखाए कि पशुओं को कैसे पाला जाता है और उनकी नस्ल कैसे सुधारी जाती है।

(5) सरकार पशुओं के लिए यथेष्ट गोचर जमीन की व्यवस्था करे और पशुपालन के अच्छे से अच्छे विशेषज्ञ दुनिया भर से बुलाए और लोगों को पशुपालन का वैज्ञानिक तरीका सिखाए।

(6) इस काम के लिए एक अलग सरकारी विभाग खोला जाए। यह विभाग लाभ कमाने के लिए नहीं चलाया जाए और इससे लोगों को अच्छी नस्ल के पशु तैयार करने और दूसरी बातों में मदद मिले।

बूढ़े, बीमार और अपंग पशुओं की देखभाल इस योजना में आ ही जाती है। इसमें कोई शक नहीं कि इस योजना पर भारी खर्च होगा, लेकिन यह ऐसा बोझ है, जिसे सब राज्यों को और सबसे बढ़ कर हिन्दू राज्य को तो खुशी से उठाना चाहिए।

मैंने इस प्रश्न पर जो विचार किया है, उससे मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि वैज्ञानिक ढंग की गौशालाएं और चमड़ा कारखाने चलाने से सरकार को इतनी आमदनी अवश्य होगी, जिससे उन पशुओं के

पालने का खर्च निकाला जा सके जो आर्थिक दृष्टि से बेकार हों। उनके गोबर से खाद के अलावा, उनका चमड़ा, चमड़े का सामान, दूध और दूध की बनी चीजें और बहुत-सी चीजें जो मरे हुए ढोरों से बन सकती हैं, बाज़ार भाव पर बेच कर आमदनी की जा सकती है। अभी मूर्खतावश या वैज्ञानिक जानकारी न होने के कारण मरे हुए पशु प्रायः फेंक दिए जाते हैं, या उनसे पूरा फायदा नहीं उठाया जाता।

यंग इंडिया 7-7-1927

× × ×

यदि गोरक्षा को शुद्ध आर्थिक दृष्टि से देखा जाए तो सूखी और बहुत कम दूध देने वाली गायों तथा बूढ़े और बेकार बैलों को काटने में सोचने की कोई ज़रूरत नहीं, लेकिन ऐसी क्रूर अर्थव्यवस्था का भारत में कोई स्थान नहीं है। यद्यपि यह भी ठीक है कि इस देश के निवासी बहुत-से क्रूर कार्यों के भी दोषी हैं।

तो फिर उन गायों को कैसे बचाया जाए जब वे का ी दूध न देती हों या आर्थिक दृष्टि से बोझ बन गई हों।

इस सवाल के जवाब ये हैं:—

(1) हिन्दू गौ और गोवंश के प्रति अपना कर्त्तव्य पूरा करें। यदि हम ऐसा करें तो हमारे पशु भारत और संसार के लिए गर्व की वस्तु बन सकते हैं। किन्तु आज दशा उल्टी ही है।

(2) पशुपालन विज्ञान को सीखें, आज इस काम को बहुत कम लोग जानते हैं।

(3) वधिया करने का वर्तमान निर्दयी तरीका बदल कर वह, अच्छा तरीका अपनाया जाए जो पश्चिम में अपनाया गया है।

(4) पिंजरापोल (बूढ़ी गाय पालने वाली संस्थाओं) को आमूल सुधारा जाए। ये संस्थाएं आजकल बिल्कुल अज्ञानी और निकम्मे लोगों के हाथ में हैं।

पाठक यह अनुभव करेंगे कि इन सब सुझावों के पीछे एक चीज़ है, वह है अहिंसा, जिसे जीव दया कहा जाता है। अगर यह मूल भावना मौजूद है तो बाकी बातें आसान हो जाती हैं। जहां अहिंसा है वहां असीम धैर्य, आन्तरिक शांति, विवेक, आत्म-त्याग, और सद्ज्ञान भी है।

हरिजन 31-8-1947

× × ×

आदर्श गोशाला अपने पाले हुए पशुओं का सस्ता और पौष्टिक दूध शहरों और आस-पास के लोगों को देगी, साथ ही यह जूते आदि भी दे सकेगी जो काटे हुए पशुओं के चमड़े के नहीं बल्कि मरे हुए पशुओं के चमड़े के होंगे। इस तरह की गोशाला शहर के बीच में या बिल्कुल पास ही एक दो एकड़ जमीन पर नहीं होगी, बल्कि कुछ दूरी पर 50 से 100 एकड़ पर होगी जिसमें आधुनिक ढंग की डेरी और आधुनिक ढंग का चमड़े का कारखाना चलाया जाएगा। यह काम पूरी तरह व्यावसायिक और साथ ही राष्ट्रीय आधार पर होगा। इस तरह इस काम में न तो कोई मुनाफा होगा और न कोई लाभांश दिया जाएगा और किसी तरह का घाटा भी नहीं होगा।

आगे चल कर इस तरह की संस्थाएं सारे देश में फैल जाएंगी और यह हिन्दुत्व की सफलता होगी और इस बात का सबूत होगा कि हिन्दू वास्तव में गाय की रक्षा करना चाहता है। साथ ही इससे हजारों लोगों को काम मिलेगा। इनमें शिक्षित लोग भी होंगे, क्योंकि डेरी और चमड़ा कारखाने में विशेषज्ञों की ज़रूरत होती है।

गोधन की उन्नति में डेनमार्क नहीं भारत को आदर्श राज्य होना चाहिए। भारत को इस बात पर शर्म आनी चाहिए कि वह हर साल 9 करोड़ रुपये की मृत पशुओं की खालों का निर्यात करे और अपनी ज़रूरत के लिए पशुओं को मार कर चमड़ा प्राप्त करे।

यंग इंडिया 22-10-1925

× × ×

गोरक्षा के लिए ये बातें ज़रूरी हैं :—

(1) हर गोरक्षक संस्था खुले में बनाई जाए जहां काफी ज़मीन यानी हजारों एकड़ ज़मीन हो जिसमें चारा उगाया जा सके और पशु चर सकें। यदि मुझे सारी गौशालाओं का प्रबंध मिल जाए तो मैं उन सब को काफी मुनाफे पर बेच डालूं और उस धन से आस-पास अच्छी ज़मीन खरीद लूं।

(2) हर गौशाला में आधुनिक ढंग की डेरी या दूध-केन्द्र और चमड़ा-कारखाना रहे, कोई भी मरा हुआ पशु बेकार न जाए और इसकी खाल, हड्डियों और खुरों आदि का वैज्ञानिक ढंग से पूरा उपयोग किया जाए।

(3) सब गौशालाओं का प्रबंध और देखभाल वैज्ञानिक ढंग से की जाए।

(4) यदि ठीक से प्रबंध किया जाए तो हर गौशाला आत्मनिर्भर हो सकती है और जो धन दान से मिले उसे गौशाला के विस्तार पर लगाया जाए। इन संस्थाओं को लाभ कमाने का जरिया बनाने का बिल्कुल विचार न हो। इनमें जो भी लाभ हो उसे लंगड़े-लूले और बेकार पशुओं को तथा उन सब पशुओं को खरीदने पर खर्च किया जाए जो कसाइयों के हाथ बेचे जाते हैं।

(5) यदि गौशालाएं भैंसों और बकरे-बकरियों को भी रखना शुरू कर दें तो पशुओं का कटना असम्भव हो जाए। लेकिन जहां तक मैं समझता हूं, जब तक सारा भारत शाकाहारी नहीं बन जाता तब तक चाहे मैं कितना भी चाहूं भेड़-बकरियां का काटा जाना नहीं रुक सकता..........

अत: केवल गौ और गोवंश का ही कटना रोका जा सकता है। गोवंश को बचाने के लिए हिन्दुओं को गौ से प्राप्त होने वाली वस्तुओं के व्यापार पर मुनाफा लेना छोड़ना होगा, सच्चे धर्म को, मानवोचित अर्थशास्त्र के अनुकूल होना चाहिए यानी आमदनी और खर्च बराबर होना चाहिए।

यह सिद्धान्त केवल गाय के साथ ही व्यावहारिक हो सकता

है, कुछ दिनों तक धार्मिक वृत्ति के व्यक्तियों का दान भी आवश्यक होगा। यह याद रखना चाहिए कि यह महान् दया कार्य गोभक्षी संसार में किया जाएगा। जब तक सारी दुनिया काफी अंश में शाकाहारी नहीं बन जाती, तब तक मैंने जो सीमाएं बताई हैं उनसे आगे बढ़ना सम्भव नहीं होगा। उस सीमा तक सफल होने से भी आनेवाली पीढ़ियों को आगे बढ़ने का रास्ता खुलेगा। इस सीमा से आगे बढ़ने का मतलब होगा, गाय को भी हमेशा के लिए, भैंस और दूसरे पशुओं की तरह, कसाईखाने के हवाले कर देना।

यंग इंडिया 31-3-1927

× × ×

आज जो लोग गौशालाएं चलाते हैं, वे खर्च करना तो जानते हैं लेकिन वे पशु पालन विज्ञान में बिल्कुल कोरे हैं। वे यह नहीं जानते कि गाय को कैसे पाला जाए ताकि वह अधिक से अधिक दूध दे और बैलों और सांडों की नस्ल कैसे सुधारी जाए। इसका नतीजा यह है कि आज सारे भारत भर में, गौशालाएं ऐसी संस्थाएं बनने की बजाए, जिनसे लोग पशुपालन की उचित विधि सीख सकें या अच्छा दूध, अच्छी गायें, बढ़िया किस्म के बैल और सांड पा सकें, जैसे-तैसे कांजी हौद मात्र बन गई हैं।

इसका परिणाम यह हुआ है कि संसार भर में सब से अधिक गोधन और शुद्ध दूध-घी से भरपूर देश होने के बजाय, हमारा देश इस मामले में सब से नीचे आ गया है। हमारे लोग यह नहीं जानते कि पशुओं के गोबर और पेशाब का क्या उपयोग किया जाए, न वे मरे हुए पशुओं का पूरा लाभ उठाना जानते हैं और उनकी नासमझी का परिणाम होता है करोड़ों रुपये की हानि। कुछ विशेषज्ञों का ख्याल है कि पशु धन, देश पर बोझ है और कटने के ही लायक है। मैं इस विचार को स्वीकार नहीं कर सकता, लेकिन यदि लोगों में पशुपालन का अज्ञान, कुछ और समय तक चलता रहा तो मुझे आश्चर्य नहीं होगा कि सच में पशु देश पर बोझ ही बन जाएं।

हरिजन 30-11-1947

× ×

ठीक से संगठन किया जाए तो पिंजरापोल अच्छी डेयरी बन सकते हैं। यहां से गरीबों को सस्ता दूध मिल सकता है। मुझे बताया गया है कि अहमदाबाद जैसे मालदार शहर में भी ऐसे गरीब मजदूर हैं जिनकी पत्नियां अपने बच्चों को पानी में आटा घोल कर पिलाती हैं। इससे ज्यादा अफसोस की और कोई बात नहीं हो सकती कि उस देश में जहां हम गाय की रक्षा करते हैं और जहां इतने अधिक पिंजरापोल हों वहां गरीबों को पीने के लिए शुद्ध और बढ़िया दूध न मिले। इससे आप लोग समझ जाएंगे कि गोरक्षा और गौशालाओं का ठीक प्रबंध न कर पाने का ही परिणाम है कि हमारे देश में इतने आदमी दीन, दुर्बल और क्षुधित हैं।

यंग इंडिया 29-1-1925

× × ×

यह कहना गलत है कि गाय के दूध की मांग नहीं है। यदि हम दूसरा सब दूध बन्द कर दें और सबसे अच्छा शुद्ध व पौष्टिक दूध देना शुरू कर दें तो हर आदमी इसका ग्राहक बन जाएगा। लेकिन पहली चीज़ है भैंस के दूध का त्याग। जैसे केवल खादी के इस्तेमाल पर मैं ज़ोर देता हूं, उसी तरह यह बात (गाय का दूध) भी है। जब तक आपका ध्यान खादी और मिल दोनों कपड़े में बंटा रहेगा, तब तक खादी को प्रोत्साहन नहीं दे सकते........एक चीज़ पर ही ज़ोर दीजिए..........

बम्बई शहर को ही लीजिए। यहां बच्चों की गिनती कीजिए। उन लोगों के नाम लिखिए जो अपने बच्चों के लिए केवल गाय का दूध ही लेना चाहते हैं और आप अपनी डेरियों को केवल बच्चों के लिए गाय का दूध देने के लिए ही रखिए। आपको मालूम है कि चाय जैसी चीज़ का कैसे प्रचार किया जाता है? चाय के पैकेट मुफ्त बेचे जाते हैं। ऐसी दुकानें चलाई जाती हैं जहां मुफ्त चाय मिलती है। गाय के दूध का प्रचार करने के लिए आप भी ऐसा ही कर सकते हैं। आप अपने सामने सारी बम्बई को दूध दे सकने का लक्ष्य रखें।

कलकत्ता जैसे शहर में भी गाय के दूध की मांग है। हरियाणा की सबसे बढ़िया नस्ल की गायें कलकत्ता ले जाई जाती हैं लेकिन जैसे ही वे सूख जाती हैं उन्हें कसाई के हाथ बेच दिया जाता है। इसका नतीजा यह हुआ है कि पंजाब में ही हरियाणा की गाय दुर्लभ होती जा रही है। नहीं, गाय तो कसाई के हाथ में पड़नी ही नहीं चाहिए।

हरिजन 19-6-1937

× × ×

गौ और गोवंश को गुलाम बना रखा है और खुद भी गुलाम बन गए हैं।

यंग इंडिया 6-10-1921

× × ×

गोरक्षिणी संस्थाओं को इन बातों पर अपना ध्यान देना चाहिए कि पशुओं को खिलाना-पिलाना, उनके साथ निर्दयता को रोकना, मिटते हुए गोचरों की रक्षा करना, नस्ल का सुधार करना और गरीब ग्वालों से पशु खरीदना और पिंजरापोलों को आदर्श, आत्म-निर्भर दूधशाला की तरह चलाना।

यंग इंडिया 29-5-1924

× × ×

हमारी धार्मिक भावना, जिस हद तक अनुमति दे, हमें वहां तक वैज्ञानिक विधियों को अपनाना चाहिए। हमें वैज्ञानिक ढंग से पशुओं को पालना चाहिए। थोड़े-से-थोड़े खर्च में बढ़िया-से-बढ़िया चारा पशुओं के लिए जुटाने के तरीके निकालने चाहिएं। पशु को न सताते हुए उससे अधिक से अधिक काम लेना चाहिए और अपनी गायों और भैंसों से दूध की उपज बढ़ाना चाहिए। यदि हम यह काम कर सके तो हम पशु समस्या हल करने में काफी आगे बढ़ जाएंगे।

यंग इंडिया 27-8-1925

× × ×

जैसे-जैसे पशु घटते जाते हैं किसान का अपने घर में रहना मुश्किल हो जाता है। इसलिए वह बछड़ों को बेच देता है और बछड़ों को या तो मार डालता है या भूखे मरने के लिए छोड़ देता है। अगर हम सहकारी ढंग से पशु-पालन शुरू कर दें तो यह बेरहमी रोकी जा सकती है।

हरिजन 8-3-1942

× × ×

गो और गोवंश को गुलाम बना रखा है और खुद भी गुलाम बन गए हैं।

यंग इंडिया 6-10-1921

× × ×

गोरक्षिणी संस्थाओं को इन बातों पर अपना ध्यान देना चाहिए कि पशुओं को खिलाना-पिलाना, उनके साथ निर्दयता को रोकना, मिटते हुए गोचरों की रक्षा करना, नस्ल का सुधार करना और गरीब ग्वालों से पशु खरीदना और पिंजरापोलों को आदर्श, आत्म-निर्भर दूधशाला की तरह चलाना।

यंग इंडिया 29-5-1924

× × ×

हमारी धार्मिक भावना, जिस हद तक अनुमति दे, हमें वहां तक वैज्ञानिक विधियों को अपनाना चाहिए। हमें वैज्ञानिक ढंग से पशुओं को पालना चाहिए। थोड़े-से-थोड़े खर्च में बढ़िया-से-बढ़िया चारा पशुओं के लिए जुटाने के तरीके निकालने चाहिएं। पशु को न सताते हुए उससे अधिक से अधिक काम लेना चाहिए और अपनी गायों और भैंसों से दूध की उपज बढ़ाना चाहिए। यदि हम यह काम कर सके तो हम पशु समस्या हल करने में काफी आगे बढ़ जाएंगे।

यंग इंडिया 27-8-1925

× × ×

जैसे-जैसे पशु बढ़ते जाते हैं किसान का अपने घर में रहना मुश्किल हो जाता है। इसलिए वह बछड़ों को बेच देता है और कट्टों को या तो मार डालता है या भूखे मरने के लिए छोड़ देता है। अगर हम सहकारी ढंग से पशु-पालन शुरू कर दें तो यह बेरहमी रोकी जा सकती है।

हरिजन 8-3-1942

× × ×

मेरे पास ऐसे आंकड़े मौजूद हैं जिनको देख कर आंखें खुल जाती हैं। इनसे पता चलता है कि कितने पशु हर साल काटे जाते हैं और कितने अपने-आप मरते हैं। 1935 की पशु गणना के अनुसार 80 प्रतिशत पशु मरते हैं और 20 प्रतिशत मारे जाते हैं।

स्वत: मरनेवाले पशुओं की संख्या, अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग है। जहां अच्छे चरागाह हैं और खेती ढंग से होती है वहां केवल 7 प्रतिशत पशु मरते हैं। अकाल वाले इलाकों में यह संख्या 30 प्रतिशत है........यह तो सभी जानते हैं कि गाय को आमतौर से हिन्दू ही रखते हैं। यदि हिन्दू अपने अक्षम्य अज्ञान को दूर कर सकें तो वे वहुत-से पशुओं को मौत से भी आसानी से वचा सकते हैं।

हरिजन 27-2-1937

M82DPD/67—GIPF.